<u>*प्रेस विज्ञप्ति*</u>

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233

मोक्ष ऐसा द्वीप है जहां आदमी सुरक्षित रहता है : आचार्य महाश्रमण

<u>**सरदारशहर 17 जून, 2010**</u>

आचार्यश्री महाश्रमण ने धम्मपद और उत्तराध्ययन पर तुलनात्मक प्रवचन करते हुए स्थानीय चौरड़िया प्रशाल में कहा कि जब वर्षा का मौसम होता है तो आदमी वर्षा के पानी से बचने का उपाय करता है। सर्दी और गर्मी का मौसम होता है तो उसके अनुरूप वह अपने शरीर की सुरक्षा पर ध्यान देता है यानी हर मौसम में शरीर की सुरक्षा रह सके इस पर मनुष्य ध्यान देता है।

आचार्यश्री महाश्रमण ने आगे कहा जहां बाढ़ न आ सके ऐसे द्वीप की व्यवस्था करनी चाहिए और वह द्वीप धर्म है जहां आदमी सुरक्षित रह सकता है। द्वीप बनाते समय चार बातों का ध्यान देना चाहिए जिसमें पहली बात है उत्थान, उद्योगशीलता, पुरुषार्थशीलता हो तो सुंदर द्वीप का निर्माण किया जा सकता है, आलस्य के समान आदमी का कोई शत्रु नहीं होता है आलस्य शत्रु ऐसा है जो आदमी के शरीर में रहता है और वह आदमी का नुकशान करता है और परिश्रम महान बंधु है जिससे आदमी सुरक्षित रहता है। पुरुषार्थ करे लेकिन वह भी सही दिशा में होना चाहिए। दूसरा उपाय है अप्रमाद, अपने कार्यों के प्रति, अध्यात्म के प्रति, आत्मा के प्रति जागरूकता रहे। तीसरी बात है द्वीप के निर्माण के लिए मन, वाणी और काय का संयम हो, चौथा उपाय है इन्द्रियों का संयम, मनुष्य शरीर में पांच ज्ञानेन्द्रियां है वे गलत रूप में प्रवृर्तित न हो। उत्थान, अप्रमाद, संयम और दम के द्वारा आदमी सुंदर द्वीप का निर्माण कर सकता है।

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि जैसा धम्मपद में कहा गया है वैसा ही उत्तराध्ययन में चार बातें बताई गई है जिनमें पहली बात है मनुष्य जन्म दुर्लभ है। श्रद्धा, संयम में पराक्रम करना चाहिए। जिस तरह धम्मपद में द्वीप के निर्माण की बात आती है वैसे ही उत्तराध्ययन में घर के निर्माण की बात आती है कि रास्ते में घर का निर्माण नहीं करना चाहिए घर ऐसी जगह बनाएं कोई तोड़ने वाला नहीं हो, सुरक्षित स्थान पर घर का निर्माण हो और वह सुरिक्षत स्थान है मोक्ष। जहां आदमी स्थायी रूप से रह सकता है। एक अच्छे द्वीप का निर्माण हो सकता है।

प्रवचन के पश्चात भंवरीदेवी नाहटा, सुजानमलजी दुगड़, समणी मृदु प्रज्ञा ने अपनी भावनाएं व्यक्त की।

इस अवसर पर अपनी भावनाओं को लेकर नोखा से भी अनेक श्रद्धालुओं का आगमन हुआ उन्हें प्रवचन के पश्चात आचार्यश्री महाश्रमण ने सेवा आदि का अवसर प्रदान किया।

शीतल बरड़िया

(मीडिया संयोजक)